बीनू पाठक
विभागाध्यक्ष (सेवानिवृत्त)
समाजशास्त्र विभाग
पूर्णियाँ विश्वविद्यालय, पूर्णियाँ
(बिहार)

Dr. BINU PATHAK
Ex- Head of the Department
Sociology,
Purnea University, Purnia
(Bihar)

62

Ref No.

Date___/___/_____

पूर्णियाँ विश्वविद्यालय, पूर्णियाँ

पी.एच.डी प्रतिवेदन

गवेषिका का नाम – अंजली कुमारी

विषय – समाजशास्त्र

संकाय – समाजविज्ञान

अंजली कुमारी द्वारा प्रस्तुत पी. एच. डी प्रतिवेदन शोध प्रबंध सात अध्यायों में विभक्त है।

प्रथम अध्याय में गवेषिका ने अध्ययन विषय की अवधारणा का विश्लेषण करने का प्रयास किया है। भारत की नई शिक्षा नीति तथा सुचना–क्रांति के कारण संचार साधनों का विकास हुआ है। जिसका प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों में भी देखने को मिल रहा है। गवेषिका ने संचार साधनों को परिभाषित कर इसे वैश्वीकरण से जोड़ने का प्रयास किया है।

द्वितीय अध्याय में गवेषिका के द्वारा डिजिटल इंडिया के ग्रामीण जीवन पर प्रभावों का विश्लेषण किया गया है।

तृतीय अध्याय में डिजिटल इंडिया को रोजगार प्राप्त करने के साधन के साथ जोड़ने का प्रयास किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में डिजिटल इंडिया के कारण ग्रामीणों के आय में होने वाली वृद्धि का वर्णन किया गया है। इंटरनेट बैंकिंग के कारण आर्थिक क्षेत्र में गतिशीलता आयी है।

पाँचवे अध्याय में गवेषिका ने बताया है कि संचार साधनों के विकास के कारण ग्रामीणों के स्वास्थ्य पर भी अच्छा प्रभाव पड़ा है।

Scanned with OKEN Scanner

छठे अध्याय में ग्रामीण जीवन पर डिजिटल इंडिया के प्रभाव के कारण दैनिक जीवन का तीव्र गति से विकास हुआ है तथा ग्रामीण क्षेत्र में लोगों की नैतिकता पर पड़ने वाले इसके प्रभाव का भी वर्णन किया है।

सप्तम अध्याय के अध्ययन विषय का निष्कर्ष एवं सुझाव प्रस्तुत किया गया है।

गवेषिका अंजली कुमारी द्वारा प्रस्तुत पी.एच.डी शोध–प्रबंध में निष्कर्ष के रूप में कहा है कि संचार साधनों का ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के कारण गाँवों में आधुनिकता आयी है। इन्होने अपने शोध निष्कर्ष के द्वारा समाजशास्त्रीय अध्ययन में एक नई अवधारणा प्रस्तुत की है। गुणवत्ता पूर्ण शोध प्रबंध के आधार पर अंजली कुमारी को समाजशास्त्र में पी.एच.डी उपाधि प्रदान करने की अनुशंसा करती हूँ।

डा0 बीनू पाठक
पूर्व– प्रमुख और डीन
समाजशास्त्र विभाग
पूर्णियाँ विश्वविद्यालय, पूर्णियाँ

Scanned with OKEN Scanner

प्रो. रविप्रकाश पाण्डेय
अवकाशप्राप्त प्रोफेसर एवं
विभागाध्यक्ष

समाजशास्त्र विभाग,
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,
वाराणसी–221002

पत्रांक

दिनांक : 31 अगस्त 2024

शोध प्रबन्ध मूल्यांकन रिपोर्ट

शोधछात्रा का नाम : **अंजली कुमारी**

शोध शीर्षक : डिजिटल इण्डिया का ग्रामीण जीवन पर प्रभाव विशेषतः कटिहार जिला के सन्दर्भ में एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

विभाग : समाजशास्त्र विभाग, समाज विज्ञान संकाय, पूर्णियां विश्वविद्यालय, पूर्णियां, बिहार

शोधछात्रा अंजली कुमारी के उक्त शोध प्रबन्ध का मूल्यांकन किया। डिजिटल इण्डिया एक अत्यन्त ही समसामयिक शोध का विषय है। भारत जैसा विकासशील राष्ट्र डिजिटल इण्डिया के कारण आज वैश्विक स्तर पर तीव्र गतिमान है।

इस शोध प्रबन्ध में कुल सात अध्याय हैं। अध्याय – 1 ''प्रस्तावना'' विषयानुरूप है। अध्याय – 2 ''डिजिटल इण्डिया : शैक्षिक आधार पर ग्रामीण जीवन पर प्रभाव'' के अन्तर्गत ग्रामीण जीवन पर डिजिटल इण्डिया के प्रभाव की समीक्षा प्रभावशाली है। अध्याय – 3 ''डिजिटल इण्डिया : रोजगार के आधार पर ग्रामीण जीवन पर प्रभाव'' के अन्तर्गत ग्रामीण जीवन पर डिजिटल इण्डिया के प्रभाव के परिणामस्वरूप रोजगार में वृद्धि का तथ्यपरक विश्लेषण प्रशंसनीय है। अध्याय – 4 ''डिजिटल इण्डिया : आय के आधार पर ग्रामीण जीवन पर प्रभाव'' के अन्तर्गत ग्रामीण जीवन पर डिजिटल इण्डिया के प्रभाव के परिणामस्वरूप आय में वृद्धि सम्बन्धी निष्कर्ष आज की वास्तविकता है। अध्याय – 5 ''डिजिटल इण्डिया : स्वास्थ्य के आधार पर ग्रामीण जीवन पर प्रभाव'' ग्रामीण जीवन पर डिजिटल इण्डिया द्वारा गहरा प्रभाव पड़ रहा है जिससे जनसामान्य में जागरूकता आयी है और इससे स्वास्थ्य सुधार की प्रक्रिया गतिमान हुई है। अध्याय – 6 ''डिजिटल इण्डिया : दैनिक जीवन के आधार पर ग्रामीण जीवन पर प्रभाव'' के अन्तर्गत ग्रामीण जीवन पर डिजिटल इण्डिया के प्रभाव के कारण दैनन्दिन जीवन में सकारात्मक परिवर्तन की तथ्यात्मक विवेचना एक मौलिक कार्य है। अध्याय – 7 ''शोध अध्ययन की उपलब्धियाँ, निष्कर्ष एवं सुझाव'' के अन्तर्गत शोध का निष्कर्ष, सुझाव एवं उपलब्धियाँ गुणवत्तापूर्ण ढंग से प्रस्तुत की गयी है।

शोध प्रबन्ध की सन्दर्भ ग्रन्थ सूची अद्यतन है। शोध प्रबन्ध में यथास्थान समाज वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग किया गया है। शोध प्रबन्ध की भाषा सरस है तथा इसकी शैली सहज है। महत्वपूर्ण चित्रों की प्रस्तुति यथास्थान की गयी है। समग्र दृष्टि से शोध प्रबन्ध गुणवत्तापूर्ण है।

क्रमश : .....

Scanned with OKEN Scanner

प्रो. रविप्रकाश पाण्डेय
अवकाशप्राप्त प्रोफेसर एवं
विभागाध्यक्ष

समाजशास्त्र विभाग,
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,
वाराणसी–221002

पत्रांक

दिनांक : 31 अगस्त 2024

(2)

2014 के बाद डिजिटल इण्डिया के क्षेत्र में क्रान्ति आ गयी है। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक परिवर्तन और रूपान्तरण की गति तीव्र हुई है। मनुष्य की सामाजिक क्रिया, सामाजिक व्यवहार, सामाजिक अन्तःक्रिया पर इसका तेजी से प्रभाव पड़ रहा है। यह ज्ञान का एक नया क्षेत्र है। उक्त शोध प्रबन्ध के माध्यम से ज्ञान के इस नये क्षेत्र में एक नवीन विमर्श का मार्ग प्रशस्त हुआ है। इस सन्दर्भ में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की उपयोगिता है।

गुणवत्तापूर्ण शोध प्रबन्ध के आधार पर अंजली कुमारी को समाजशास्त्र में पी–एच.डी. उपाधि प्रदान करने की मैं संस्तुति करता हूँ।

संस्तुति

अंजली कुमारी को समाजशास्त्र में पी–एच.डी. उपाधि प्रदान करने की मैं प्रबल संस्तुति करता हूँ।

31/8/2024

दिनांक : 31 अगस्त 2024
वाराणसी

प्रो. (रविप्रकाश पाण्डेय)
वाह्य परीक्षक

Scanned with OKEN Scanner

P.G. DEPARTMENT OF SOCIOLOGY

Patliputra University, Patna

Prof. Ajay Kumar
Ex-Dean & Head
Email- ajaykumar1106@gmail.com

Address :
6RC/12 Bahadurpur Housing Colony, Kankarbagh,
Patna-800026
Mob No-8002658723

पूर्णिया विश्वविद्यालय, पूर्णिया

Ph.D. Report

गवेषिका का नाम - **अंजली कुमारी**

विषय - समाजशास्त्र

संकाय - समाज विज्ञान

अंजली कुमारी द्वारा उपस्थापित Ph.D. शोध प्रबंध सात अध्यायों में विभक्त है तथा 206 पृष्ठों में विस्तारित है। **प्रथम अध्याय** में गवेषिका ने अध्ययन विषय की अवधारणा को विश्लेषित करने का प्रयत्न किया है। भारत की नई शिक्षा नीति तथा सूचना क्रांति के कारण संचार साधनों का विकास हुआ है। जिसका प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों में भी दिखाई दे रहा है। गवेषिका ने संचार साधनों को परिभाषित करने का प्रयत्न किया है तथा वैश्वीकरण से इसे जोड़ने का प्रयत्न किया गया है। कई समाजशास्त्रियों के विचारों को भी रखा गया है। इसी अध्याय में पूर्व में किए गए अध्ययनों की समीक्षा की गई है तथा अध्ययन विषय पर बारह विद्वानों के विचारों को प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य शोध प्रश्न, अनुसंधान प्ररचना तथा अध्ययन पद्धति की विस्तार से चर्चा की गई है।

द्वितीय अध्याय में गवेषिका द्वारा ग्रामीण जीवन पर डिजिटल इंडिया के प्रभावों का वर्णन प्रस्तुत किया है। बिहार के विद्यालयों में कंप्यूटर नेटवर्क की व्यवस्था तथा कंप्यूटर आधारित पाठ्यक्रम की संरचना विकसित की गई है। जिससे ग्रामीण विद्यालयों में भी कंप्यूटर शिक्षा के प्रति ललक बढ़ी है। इसी अध्याय में उत्तरदाताओं के पृष्ठभूमि को सत्रह तालिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय में डिजिटल इंडिया को रोजगार प्राप्त के साधन के साथ जोड़ने का प्रयत्न किया है। उत्तरदाताओं से प्राप्त प्रत्युत्तर से यह ज्ञात हुआ है कि डिजिटल इंडिया के कारण रोजगार की संभावना बढ़ी है। यातायात के साधन के विकास के कारण ग्रामीणों का शहर के लोगों से संपर्क बड़ा है। ऑनलाइन निबंधन एवं प्रमाण पत्र प्राप्त करने हेतु साइबर कैफे गांव - गांव में चल रहे हैं।

Scanned with OKEN Scanner

चतुर्थ अध्याय में गवेषिका ने डिजिटल इंडिया के कारण ग्रामीणों के आय में होने वाली वृद्धि का वर्णन किया है। इनका कहना है कि संचार साधन के कारण लोगों में वैज्ञानिक दृष्टि का विकास हुआ है। स्वरोजगार विकसित हुई है तथा इंटरनेट बैंकिंग के कारण आर्थिक क्षेत्र में गतिशीलता आई है। इस अध्याय में गवेषिका ने दस तालिकाओं के द्वारा उत्तरदाताओं से प्राप्त प्रत्युत्तर को चित्रित किया है।

पंचम अध्याय में गवेषिका ने बताया है कि संचार साधनों के विकास के कारण ग्रामीणों के स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव पड़ा है। संचार तकनीकी के कारण रोगियों के उपचार के लिए नए-नए अवसर उत्पन्न हुए हैं। शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में भी सूचना तकनीकी का उपयोग हो रहा है। सरकार द्वारा संचालित स्वास्थ्य सुविधा की जानकारी लोगों को मिल रही है। इस अध्याय में उत्तरदाताओं से प्राप्त प्रत्युतर को तालिका के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

षष्ठ अध्याय में गवेषिका ने लिखा है कि ग्रामीण क्षेत्र में सूचना क्रांति के कारण कंप्यूटर इंटरनेट, सैटेलाइट, ईमेल तथा अन्य सूचना तकनीक का तीव्र गति से विकास हुआ है। डॉक्टर श्यामाचरण दुबे द्वारा प्रस्तुत वैश्वीकरण से उत्पन्न संकटों की चर्चा की गई है तथा ग्रामीण क्षेत्र में लोगों की नैतिकता पर पड़ने वाले इसके प्रभाव का भी वर्णन किया गया है। बाजारवाद के कारण ग्रामीण क्षेत्र में एक नवीन जीवन शैली विकसित हुई है जिससे परंपरागत आचार व्यवहार को चुनौती मिल रही है।

सप्तम अध्याय में अध्ययन विषय का निष्कर्ष एवं सुझाव प्रस्तुत किया गया है। गवेषिका ने अपना अध्ययन समग्र कटिहार जिला का चयन किया है। इन्होंने बहु स्तरीय निरीक्षण पद्धति के आधार पर मनिहारी अनुमंडल के दिलावरपुर पंचायत का चयन किया है। उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति के द्वारा 200 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। निष्कर्ष के रूप में गवेषिका ने लिखा है कि संचार साधनों के विकास के कारण शिक्षा पद्धति में व्यापक परिवर्तन हुए हैं। अधिकांश उत्तरदाताओं ने अपनी सहमति दी है कि इसके कारण उत्पादन में वृद्धि हुई है तथा लोगों में नई वैज्ञानिक सोच विकसित हुई है। इन सभी सुविधाओं के बावजूद गांव का नैतिक आचरण प्रभावित हुआ है तथा लोगों की सामाजिकता में कमी आई है।

गवेषिका अंजली कुमारी द्वारा प्रस्तुत Ph.D. थीसिस ने निष्कर्ष के रूप में कहा है कि संचार साधनों का ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के कारण गांवों में आधुनिकता आई है। इन्होंने अपने शोध निष्कर्ष द्वारा समाजशास्त्रीय अध्ययन में एक नई अवधारणा प्रस्तुत की है। मैं इनके शोध कार्य को Ph.D. की उपाधि हेतु अनुशंसा करता हूं।

04/09/24

Prof. AJAY KUMAR
Head (Rtd.)
Dept. of Sociology
Patliputra University, Patna -800020
Mob. 8002658723

Scanned with OKEN Scanner